गन्ध

ग–गतिमान, न्–न्याय, ध–धन

अशोक मानव

अर्थात गतिमान न्याय का धन। गन्ध की प्राकृतिक परिभाषा है जीव की प्रवृत्ति द्वारा बनने वाली गन्ध ऊर्जा रूप में निकलकर दूसरे जीवों की गन्ध से मिलकर एक नई गन्ध का निर्माण करती है। गन्ध जीव के गुणों का अंश है जिसे श्वशन क्रिया से पहचाना जा सकता है। सामाजिक परिभाषा के अनुसार गन्ध जीव के व्यक्तित्व की पहचान है। गन्ध जीव रचना से तैयार होती है। जीव द्वारा धारण किया गया आहार प्रवृत्ति, भावना और विचार के अनुरूप गन्ध का निर्माण करता है। यह गन्ध हवा में मिल जाती है जो दूसरी गन्ध से मिलकर प्रकृति में न्याय स्थापित करने का धन है। गन्ध श्वशन क्रिया के माध्यम से शरीर के अन्दर प्रवेश कर जाती है जो शरीर की गन्ध में मिलकर रसायनिक क्रिया करने लगती है। इसी रसायनिक क्रिया से जीवन में मिलने वाला हक और अपने गुण के फैलाव की प्राकृतिक रूप से न्यायिक क्रिया होती है। प्रकृति में जीवों की गन्ध के मिश्रण से निरंतर नये जीवों का विस्तार होता है। जीव का स्वरूप भौगोलिकता के आधार पर बनावट में अंतर, सुन्दरता का विस्तार, गुणों का निर्माण स्थापित होता है। प्रकृति में रंगों का निर्माण गन्ध से स्थापित होता है। रंग गुणों को ताकतवर बनाते है, जीव की सुरक्षा करते है और प्रदूषण फैलाने वाली नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर खत्म करते है। नये निर्माण में अपना रंग मिलाकर सुरक्षात्मक कवच बनाने की क्रिया करते है और गुणों का निर्माण कर नये गुणों में परिवर्तित करते है। जो अन्य जीवों के धारण करने से ताकत बढ़ाने की क्रिया करते है और रोग न उत्पन्न हो सके उसके लिए जीवाणु का निर्माण करते है। गन्ध दूसरी गन्ध को दबा कर अपने गुणों का जीवाणु बनाने की क्रिया करती है। जिससे जीव रोगी होने से बच पाता है। शरीर में होने वाले अनेको रोगों का कारण गन्ध है। पेट में बनने वाली गैस गन्ध के अनुसार जीवाणु पैदा करती है। जिस गुण के जीवाणु बनते है उसी तरह का रोग शरीर में हो जाता है। सकारात्मक सोच बनाकर अपनी प्रवृत्ति की गन्ध से इस तरह के जीवाणु को मारकर रोग को खत्म किया जा सकता है। जब दवा या औषधि रोग को दूर करने के लिए खायी जाती है तो उसकी गुणात्मक गन्ध इस गुण के जीवाणु बनाने लगते है जो रोग फैलाने वाले जीवाणु को खत्म करने लगते है और रोग फैलाने वाले जीवाश्म की जलवायु को खत्म कर देते है। इस क्रिया को अच्छे विचार की प्रवृत्ति की गन्ध से भी पूरा किया जा सकता है। पदार्थ जीव वनस्पति की गन्ध के माध्यम से प्रकृति न्याय स्थापित करने और जीवों में गुणों का विकास करने, उनका हक दिलाने और उनकी सुरक्षा करने की क्रिया करता है।

गन्ध प्रकृति का गुण है जो न्याय स्थापित करने की क्रिया करती है। गन्ध जमीनी सतह है। जब इससे मिलने वाली दूसरी गन्ध निर्माण करती, जिससे नये गुणों के गन्ध का निर्माण होता है तो उसे सुगन्ध कहते है। जो प्रकृति में फैलकर सुगन्ध बढ़ाती है जिससे सकारात्मक सोच बढ़ती है और नकारात्मक ऊर्जा जलकर खत्म होती रहती है। जब गन्ध विपरीत गुण से जोड़ दी जाती है तो दुर्गन्ध बन जाती है। इससे निर्माण नही होता है बल्कि प्रदूषण फैलता है। जो बिमारी जैसे जीवाणु पैदा होने लगते है, जो रोग को बढ़ाते है। इसे गन्ध में सुगन्ध मिलाकर खत्म किया जा सकता है। मानव अपनी अच्छी प्रवृत्ति की गन्ध से सहयोगी गन्ध को मिलाकर सुगन्ध पैदा करके दुर्गन्ध को रोकर बिमारी से बच सकता है। यही कारण है कि जब बिमार आदमी से सहयोगी लोग मिलने जाते है तो सुगन्ध बढ़ती है और व्यक्ति जल्दी ठीक हो जाता है। जब किसी सहयोगी व्यक्ति से मिलना हो तो उस जैसा विचार बनाकर सुगन्ध को बढ़ाया जा सकता है और विरोधी गुण का है तो उसकी सोच के विपरीत सोच बनाकर दुर्गन्ध बनने से रोका जा सकता है। सोच के विपरीत सोच बनाने से गन्ध की एक दीवार खड़ी हो जाती है। जिसे विपरीत गुण की पार करके पास नहीं आ पाती है। जिससे दुर्गन्ध का निर्माण नहीं हो पाता है।